काशी- माहात्म्य

~~पूर्व भाग~~

~~बृहत काशी दर्शन~~

काशी दर्शन

काशी-महिमा

यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे स महेश्वरः।
जन्तोर्दक्षिण कर्णे तु मत्तारं समुपादिशेत्॥

— काशी में जो मनुष्य किसी भी स्थान में शरीर त्यागता है [अर्थात मरता है] चाहे वह प्राणी पापी क्यों न हो उसे शंकर भगवान उसके दाहिने कान में तारक मन्त्र सुनाकर मुक्ति देते हैं।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं धर्मार्थकाममोक्ष
स्वरूपरूपः हि विश्वरूपस्तस्मान्न काशी सदृशी
॥78 अ० काशी खण्ड अ०3

— विश्वनाथ जी काशी में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने के लिए मूर्तिमान होकर स्वयं विराजमान हैं।
यहाँ काशी पुरी में मुक्तिलाभ पर कौन आश्चर्य की बात है क्योंकि वह विश्वनाथ अखण्ड सच्चिदानन्द साक्षात् विश्वरूप हैं इसी से त्रैलोक्य भी काशी के समान नहीं है और इसी कारण से यह काशी सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है।

— ब्रह्मज्ञानं तदेवाहं काशी संस्थिति भागिनाम।
दिशामि तारकं प्रान्ते मुच्यते ते तु तत्क्षणात्
काशी खण्ड 16 अ० 32॥

भावार्थ – विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं
स्वभाव पंचेन्द्रिय चञ्चल है मनुष्य को कलियुग में ब्रह्मज्ञान का उपदेश कहां हो सकता है इसी कारण से मैं काशी में अन्त समय ब्रह्मज्ञान का उपदेश करता हूं अतएव काशीवासी जन अन्त समय इसी ब्रह्मज्ञान रूप तारक मन्त्र के उपदेश से उसी क्षण मुक्त हो जाते हैं और सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि काशी में मरने वाले कैसे भी पापी हो दुराचारी, चरित्रहीन, चाण्डाल क्यों न हो और चाहे पुण्यात्मा हो सबको श्री भगवान विश्वनाथ जी एक ही प्रकार की मुक्ति देते हैं।

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवां प्रति प्रतिज्ञाद्वयम् ।
जीवतोऽन्नं ददासि त्वं मृते मुक्तिं ददाम्यहम् ॥
(काशी रहस्य)

अर्थ – काशी में विश्वनाथ जी और पार्वती जी की दो प्रतिज्ञा है कि प्राणी को जीवन काल में (अन्न) आप (अन्नपूर्णा जी) दें तथा मृत्यु के पश्चात् स्वयं साक्षात् विश्वनाथ जी उसे मुक्ति देंगे।

इस प्रकार भगवान विश्वनाथ की स्वयं प्रतिज्ञा है कि काशीक्षेत्र में मरने वाले जीव को वह मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करेंगे। किन्तु काशी क्षेत्र में सत्कर्म, पूजन, स्नान, दर्शन, जप कीर्तन आदि साधारण नियम है। काशी में कुछ देवताओं के दर्शन नित्ययात्रा में अंकित हैं। पर ऐसा सम्भव नहीं है कि काशी में रहकर कोई दुराचार करे, जीव हत्या करे तथा नाना प्रकार के पापाचार करें, फिर भी उसे मुक्ति मिले। स्वयं

अजामिल का दृष्टान्त है कि उसके अनेक पाप होने पर भी अन्त समय वह सद्बुद्धि हुआ और आत्मा से ईश्वर का नाम लिया तो मुक्ति का पात्र हो गया। इसी प्रकार काशी के बारे में निम्न लिखित श्लोक पुराणों में अंकित हैं।

अवश्यं काशिका सेव्या सर्वकर्मनिवारिणी।
मानुष्यम्प्राप्य ये मूढा निमेषमित जीवितम्।
न सेवन्ते पुरीं काशीं ते मुष्टा मन्द बुद्धयः ॥

(काशीखण्ड अ० ६५ श्लो० ६६)

अर्थ - कार्तिकेय जी अगस्त जी से कहते हैं - सभी कर्मों का निवारण करने वाली काशी की सेवा अवश्य करनी चाहिए। क्षणमात्र जीवन वाले मनुष्य जन्म को प्राप्त कर जो काशी वास नहीं करता है, वह मन्द बुद्धि प्रायः जीवन से हाथ धो लिए।

. . . . ०२०११०८०)

अर्थ — कार्तिकेय जी कहते हैं - इस काशी में एक मात्र मुक्ति देने वाले भगवान विश्वनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। और वे ही काशी को प्राप्त कराते हैं तथा काशी में मुक्ति भी देते हैं ॥

कृपा से काशी भी प्राप्त हो जाय तो वे मुक्त ही हैं। इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है।

पादृग्भि: प्राप्यते मुक्ति: काश्यां मोक्षोत्तमोत्तम:।
सत्यं सत्यं पुन: सत्यं सत्यपूर्वम्पुन: पुन:।
न काशीसदृशी मुक्त्यै भूमिरन्याम ही तले।
विश्वेशो मुक्तिदो नित्यं मुक्त्यै चोत्तरवाहिनी॥
(स्कन्दपुराण काशीखण्ड अ० ६४,

अर्थ – स्कन्दजी अगस्तजी से कहते हैं। काशी में जिन विधाओं से उत्तमोत्तम मोक्ष की प्राप्ति होती है वे निम्नलिखित हैं। सत्य पूर्वक त्रिवार सत्य है क्यों कि पृथ्वी तल पर मुक्ति प्रदान करने वाले काशी के समान कोई अन्य पुरी नहीं। काशी में मुक्ति देने वाले भगवान विश्वेश्वरनाथ जी हैं। और उत्तर वाहिनी भगवती गङ्गाजी हैं।

एक एव हि विश्वेशो मुक्तिदो नान्य एव हि।
स एव काशीम्प्रापय्यमुक्तिं यच्छतिनान्यत:॥
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लोक ५४)

अर्थ – कार्तिकेय जी कहते हैं - इस काशी में एक मात्र मुक्ति देने वाले भगवान विश्वनाथ जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। और वे ही काशी को प्राप्त कराते हैं तथा काशी में मुक्ति भी देते हैं॥

श्लोकार्धं श्लोकपादं वा नित्यं काशीमृतम् ।
पिबन्ति ये महाभागास्तेषां भीतिर्न भैरवी ॥
(काशी रहस्य

अर्थ - काशी रहस्य का आधा श्लोक अर्थात् दो पाद अथवा एक पाद नित्य काशी की कथा सुनता या कहता है। ऐसे भाग्यशाली पुरुषों को यम से भय कौन कहे काशी में मरने से भैरवी यातना भी भोगनी नहीं पड़ती।

महापातकयुक्तोऽपि शृणुयाद्य: कथामृतम् ।
स मुक्तो मुक्ति माप्नोति पुण्य सम्भार दुर्लभाम् ॥
(ब्रह्म वैवर्तपुराण)

अर्थ - कोई भी महापातक से युक्त भी हो और काशीरहस्य की कथा सुने वह पुण्याधिक्य से भी न प्राप्त होने वाली मुक्ति को प्राप्त करता है।

काश्यां विराजमानस्त्वं,
काशीनाथेति निश्चितम् ।
प्रार्थिते काशिनाथो हि,
दीयतां शरणागतिम् ॥
(

अर्थ - काशी में विद्यमान काशी विश्वनाथ जी हैं यह बात निश्चित है। हे काशिनाथ मैं आप की शरण में आया हूँ मुझे शरणागति दीजिए यह प्रार्थना करनी चाहिए।

जन्मान्तरसहस्रैस्तु यत्पापं पूर्वसञ्चितम् ।
अविमुक्तं प्रविष्टस्य तत्सर्वं व्रजति क्षयम् ॥
(काशी रहस्य)

अर्थ- सहस्रों जन्मों में जो पूर्वकृत पाप सञ्चित हैं वे सब अविमुक्त काशीक्षेत्र में प्रवेश करने वाले को तत्काल छोड़कर चले जाते हैं।

विशेष— कर्म तीन प्रकार के हैं सञ्चित प्रारब्ध और क्रियमाण जिनमें पूर्वजन्म के किये हुए पाप अर्थात् सञ्चित पाप नष्ट हो जाते हैं। और प्रारब्ध कर्म के अनुसार काशीवासी को सुख दुःख मिलता रहता है।

काशी काशीति काशीति रसना यदि संस्कृता।
यस्य कस्यापि भूयाच्चेत्स मुक्तो नात्र संशयः॥
(स्कन्द पुराण)

अर्थ- जिन मनुष्यों की जिह्वा काशी काशी करती रहती है वह मुक्त हो जाता है इस पर सन्देह नहीं करना चाहिए।

काशी काशीति काशीति जपतो यस्य संस्थितिः।
अन्यत्रापि सतस्तस्य पुरो मुक्तिः प्रकाशते॥
(स्कन्द पुराण)

अर्थ- काशी काशी जपता हुआ जो व्यक्ति जहाँ कहीं भी मर जाता है, उसको भी काशीपुरी मुक्ति प्रदान करती है।

दुर्लभं जन्म मानुष्यं दुर्लभं काशिका पुरी ।
उभयोः सङ्गमासाद्य मुक्ता एव न संशयः ॥
(शिवपुराण)

अर्थ — मनुष्य का देह (शरीर प्राप्त करना) पाना दुर्लभ है। मनुष्य देह पाने पर भी काशी मिल जाना परम दुर्लभ है। और यदि मनुष्य काशीवास करे तो उसे मुक्त ही समझना चाहिए।

वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा ।
क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा ॥

अर्थ - जैसे भगवान विष्णु के भक्तों में भगवान शङ्कर अग्रगण्य हैं। वैसे ही पुराणों में स्कन्द पुराण का काशी रहस्य खण्ड अग्रगण्य है। और जितने भी मुक्तिप्रद क्षेत्र हैं उन सबों में सबसे उत्तम काशी क्षेत्र है।

पुरोहितेन सहितस्तोषयामास शङ्करम् ।
अविमुक्ते महाक्षेत्रे तोषितस्तेन शङ्करः ॥
(विष्णु पुराण)

अर्थ - किसी ने पुरोहित को आगे करके भगवान शङ्कर की आराधना की। महाकाशी क्षेत्र अविमुक्त में तपस्या किया। उस तपस्या से भगवान् शङ्कर परम प्रसन्न हुए।

विना काशीं न मे स्थानं विना काशीं न मे रतिः।
विना काशीं न निर्वाणं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥
(स्कन्दपुराण)

अर्थ - शङ्करजी पार्वतीजी से बोले - काशी के बिना मेरा दूसरा कोई स्थान नहीं है। और काशी को छोड़कर अन्यत्र मेरा मन भी नहीं लगता और बिना काशी के मोक्ष भी नहीं मिलता यह मैं परम सत्य कह रहा हूँ। अतः काशी में ही मोक्ष प्राप्त होता है।

महापापौघशमनीं पुण्योपचयकारिणीम्।
भुक्ति मुक्ति प्रदामन्ते को न काशीं सुधीः त्युजेत् ॥
(काशी मोक्ष निर्णय)

अर्थ - काशी महापाप के समुदाय को शान्त कर देती है और जहाँ पुण्य की वृद्धि होती है। और अन्त में भुक्ति मुक्ति दोनों देती है फिर कौन ऐसा विद्वान होगा जो काशी का परित्याग कर दे।

श्रुति स्मृति पुराणेषु सर्वशास्त्रेषु पार्वति।
काशी ब्रह्मेति निख्यातं तद्ब्रह्म प्राप्यतेऽत्र हि ॥
(काशी मूल रहस्य)

अर्थ - हे पार्वति श्रुति स्मृति पुराणों और सर्व शास्त्रों में काशी को ब्रह्म के रूप में माना गया है। यहाँ (काशी) ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

देयमेतत्कथारत्नं श्राव्यं श्रवणमङ्गलम् ।
काशीरहस्यमतुलं नानारत्नसमुद्गकम् ॥
(काशी मूल रहस्य)

अर्थ - शिव योगी कहते हैं - हे महाराज (काशी की) यह कथा रत्न जो सुनने वालों के लिए परम मङ्गल देती है वह सुनाइये, वह अतुलनीय काशी रहस्य है। यों कहिए कि वह अनेक रत्नों का गुच्छा है।

महापातकयुक्तोऽपि शृणुयाद्य: कथामिमाम् ।
गुरुसेवा पुराणस्य श्रवणं चेन्नृणां भवेत् ॥
(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

अर्थ - महापातकी भी यदि काशी रहस्य कथा को सुनता है तो उसे गुरु सेवा का अथवा पुराण श्रवण का फल प्राप्त करता है।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्र चित्रं,
धर्मार्थकामामृतरूपरूप: ।
गुरु: पिता गुरुर्माता गुरुरेव पर: शिव: ।
(काशीखण्ड)

अर्थ - स्कन्द जी अगस्त जी से कहते हैं - धर्म, अर्थ, काम अमृत स्वरूप हैं विश्वेश्वर जहाँ नहीं हैं। वह स्थान आश्चर्य जनक ही होगा। गुरु ही पिता गुरु ही माता और गुरु परम शिव है।

एकरात्रं स्थिता ये तु पुण्यसम्भारसन्ततिः।
तेषाम्प्रवर्तते नित्यं मास संवत्सरक्रमैः॥
(ब्रह्मवैवर्त पुराण)

अर्थ - अनेक जन्म के अपने पुण्य भार की कृपा से जो एक रात भी काशी निवास करते हैं, उनको निश्चित है कि मास, वर्ष के अनुसार क्रमशः फल प्राप्त होता है।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा।
पुत्ररूपजननी लोके सर्वदा हितकारिणी॥
हितकृत्सर्वजन्तूनां काशी हाऽमुत्र सिद्धिदा॥
(पद्मपुराण)

अर्थ - महाक्षेत्र अविमुक्त सदा माता के समान हितकारी है। जैसे माता पुत्र के लिए सर्वदा हितकारिणी है, वैसे समस्त प्राणियों का हित करने वाली काशी इस लोक और परलोक में सुख देती है।

शिवरूपा महादेव तत्पापं शान्तिमेष्यतु।
काश्यां स्थल-चराः कीटाः पादचारेन संहताः॥
(शिव रहस्य)

अर्थ - काशी में पैदल-चलने से जो कीट पैर के नीचे दबकर मर गये हैं और उनके मरने से जो हमें पाप लगा है, वे सब शिव रूप हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे हमारे अपराध को क्षमा करके हमें शान्ति दें।

वसन्ति काश्यां एव निर्मुक्तिकामा:
कामारिसम्प्राप्तमहत्प्रभावा: ।
दृष्ट्वा हि काशीरमेते न जन्तु
तीर्थेषु चान्येषु सदैव ते धाम ॥
वसन्ति पापा नहि काशिकायां
वसन्ति चेदत्र मृतिर्न जायते ॥
(काशी मूल रहस्य)

अर्थ - काशी में मुक्ति की अभिलाषा से लोग वसते हैं। और कामारि (विश्वनाथ जी) शिव उन्हें महाप्रभाव भी देते हैं। काशी देख कर प्राणी अन्यत्र तीर्थों में आनन्द नहीं पाता। काशी में पापी नहीं वसते और यदि वास करते भी हैं तो उनकी मृत्यु काशी में नहीं होती।

पूजयित्वा महादेवं काशीनाथं जगद्गुरुम् ।
चतुर्विधाश्च ये जीवा ये च वेदाध्ययः परे ॥
ते सर्वे मुक्तिमायान्ति काश्यां स्थावरजंगमा: ।

अर्थ — जगद्गुरु काशिनाथ महादेव जी की जो लोग पूजा करते हैं। वे चार प्रकार के जीव-चार प्रकार के वेद वे सब स्थावर जङ्गम काशी प्राप्त कर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

इत्याद्याः कोटिसंख्याश्च मुनयो दीर्घदर्शिनः।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गास्त्रिपुण्ड्राङ्कितमस्तकाः ॥११॥
(काशी मूल रहस्य अ० १)

अर्थ — शिव योगी मानधाता से कहते हैं: काशी में महर्षि और दीर्घदर्शी मुनि करोड़ों की संख्या में हैं। वे सब भस्म से लिपटे हुए देह वाले त्रिपुण्ड धारण करने वाले हैं।

विश्वनाथो ह्यहं नाथः काशिका मुक्तिकाशिका ।
सुधातरङ्गा स्वर्गङ्गा त्रयेभ्यः किन्न यच्छति ।
पञ्चक्रोशपापरिमिता तनुरेषा पुरी मम ॥
(काशी खण्ड अ० ५५ श्लो० ४२)

अर्थ – मैं नाथ विश्वनाथ हूँ काशी मुक्ति काशिका है, स्वर्गङ्गा अमृत का तरंग है ये तीनों क्या नहीं दे सकती। पञ्चक्रोशी पर्यन्त काशी मेरी शरीर रूपी पुरी है।

संसारभारखिन्नानां यातायातकृतां सदा ।
एकैव मे पुरी काशी ध्रुवं विश्रामभूमिका ॥
(काशीखण्ड अ० ५५ श्लो० ४५)

अर्थ – जो सदा संसार के यातायात से खिन्न है उनके लिए हमारी एक ही पुरी काशी विश्राम भूमि है।

विना काशीं न रमते यतोऽन्यत्र त्रिलोचनः ।
शम्भोः शक्तिरियं काशी काचित्सर्वैरगोचरा ॥२८॥
(काशी खण्ड अ० ४५)

अर्थ - त्रिलोचन शंकर जी काशी से अन्यत्र नहीं रमते शंकर की कोई विचित्र शक्ति यह काशी है। जिसको लोग नहीं जानते।

भूमिष्ठापिन यात्र भू: त्रिदिवतोऽप्युच्चैरधः-
स्थाऽपिया ।
या बद्धा भुवि मुक्तिदास्युरमृतं यस्यां मृता:
जन्तव: ॥
(काशी खण्ड अ० १ श्लो० ९)

अर्थ - यह काशी भूमि पर स्थित होकर भी भूमि नहीं है नीचे रहकर भी स्वर्ग से उच्च है। जब तक यह मुक्तिदा काशी है तब तक यहाँ मरने वाले जन्तु अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

[illegible]

या नित्यं त्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरे सुरैस्सेव्यते ।
सा काशी त्रिपुरारिराजनगरी पायादपायाज्जगत् ॥
(काशी खण्ड अ० १ श्लो० २

अर्थ — जो काशी त्रैलोक्य पावनी गंगा के तट पर स्थित हो देवताओं से सेवित है। वह विश्वनाथ भगवान की राजधानी बिनाश से जगत् की रक्षा करें।

नामेच्छयेति गिजमात्रमध्यन्तयन्ताम् ।
संसारतारणतरीमसृजत्पुरीं स: ॥

अर्थ — स्वेच्छा से भगवान विश्वेश्वर (विश्वनाथ जी) संसार को पार करने के लिए नौका के रूप में इस काशीपुरी का निर्माण किया।

अस्मिन्नैवेश्वरे क्षेत्रे सम्भोज्याः शिवयोगिनः।
कोटिभोज्यफलं सम्यगेकैकपरिसंख्यया ॥
(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ७५)

अर्थ — शिव योगियों को इस काशी क्षेत्र में भोजन कराना चाहिए। एक-एक शिव योगियों की संख्या में करोड़ो को भोजन कराने का फल होता है।

अयं विश्वेश्वरः साक्षात्स्वानरात्मा जगत्प्रभुः।
सर्वेषां सर्वसिद्धीनां कर्ताभक्तिजुषामिह ॥
(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ७६)

अर्थ - काशी में जगत स्वामी साक्षात स्वानरात्मा भगवान् विश्वनाथ भक्तों के समस्त भक्तिमानों को सभी सिद्धि प्रदान करते है।

आपद्यपि हि घोरायां काशी त्याज्या न कुत्रचित्।
यतः सर्वापदां हर्ता त्राता विश्वपतिः प्रभुः।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्स्नानदानजपादिभिः ॥
(काशी खण्ड अ० ६६ श्लो० ४८)

अर्थ - घोर आपत्ति आने पर भी काशी का त्याग न करें क्यों कि सभी आपत्तियों के विनाशक भगवान विश्वनाथ जी यहाँ निवास करते हैं। अतः स्नान दान जपादि से दिनों को सफल बनाना चाहिए।

अस्मिन् वैश्वेश्वरे क्षेत्रे सम्भोज्याः शिवयोगिनः।
कोटिभोज्यफलं सम्यगेकैकपरिसंख्यया ॥
(काशी खण्ड अ० ६९ श्लो० ७५)

अर्थ — शिव योगियों को इस काशी क्षेत्र में भोजन कराना चाहिए। एक-एक शिव योगियों की संख्या में करोड़ों को भोजन कराने का फल होता है।

अयं विश्वेश्वरः साक्षात्स्थाणुरात्मा जगत्प्रभुः।
सर्वेषां सर्वसिद्धीनां कर्ता भक्तिजुषामिह ॥
(काशी खण्ड अ० ६९ श्लो० ७६)

अर्थ — काशी में जगत स्वामी साक्षात स्थाणुरात्मा भगवान् विश्वनाथ के समस्त भक्तिमानों को सभी सिद्धि प्रदान करते हैं।

आपद्यपि हि घोरायां काशी त्याज्या न कुत्रचित्।
यतः सर्वापदां हर्ता त्राता विश्वपतिः प्रभुः।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्स्नानदानजपादिभिः ॥
(काशी खण्ड अ० ६९ श्लो० ७८)

अर्थ - घोर आपत्ति आने पर भी काशी का त्याग न करें क्यों कि सभी आपत्तियों के विनाशक भगवान् विश्वनाथ जी यहाँ निवास करते हैं। अतः स्नान दान जपादि से दिनों को सफल बनाना चाहिए।

काशीत्येष महामन्त्रो येन जप्तः स निर्भयः ॥ ३६/२
येन बीजाक्षर युग्मं काशीति हृदि धारितम् ।
अबीजानि भवन्त्येव कर्मबीजानि तस्य वै ॥
(अ० ६४ श्लो० २६)

अर्थ - स्कन्द जी अगस्त जी से बोले - जिसने 'काशी' इस दो अक्षर वाले महामन्त्र का जाप कर लिया है वह निर्भय अर्थात् मुक्त हो गया है। जिसने इस युगल बीजाक्षर 'काशी' को हृदय में धारण करता है। उसके सभी कर्मबीज जो जन्म मरण के बीज (कारण) हैं निर्बीज हो जाते हैं अर्थात् कर्म करता हुआ भी वह कर्म बन्धन से मुक्त होकर जन्म मरण से रहित हो जाता है।

क्षेममूर्तिरियं काशी क्षेममूर्तिर्भवान्भव ।
क्षेत्रमूर्तिस्त्रिपथगा नान्यत्क्षेमत्रयं क्वचित् ॥ ३६॥
येषामिह काशी भक्तिर्भर्मक्षेत्रेऽति पावने ॥ ४१/२
(काशीखण्ड अ० ६४)

अर्थ - स्कन्द जी अगस्त जी से कहे - यह काशी क्षेम अर्थात् कल्याण की मूर्ति है तथा हे विश्वनाथ जी आप भी कल्याण की मूर्ति हैं, एवं यह गङ्गा भी (क्षेम) कल्याण की मूर्ति है. अन्यत्र काशी के अतिरिक्त ये तीनों साथ-साथ प्राप्त नहीं होते। मेरे इस पावन काशीपुरी में जिसकी भक्ति होती है वह परम स्वच्छ शरीर वाला होता है।

जीनेसत्त्वमयाजाता: क्षेत्रस्यास्य निषेवणात् ।
नीरजस्का वितमस: संसारार्णवपारगा: ॥
वाराणस्यास्तु ये भक्तास्ते भक्ता मम निश्चितम् ।
जीवन्मुक्ता हि ते नूनं मोक्षलक्ष्म्या कटाक्षिता: ॥
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ४२)

अर्थ – कार्तिकेय जी अगस्ती से बोले – काशी क्षेत्र की सेवा करने से सर्वविध विनास करने से मनुष्य सत्त्वमय हो जाते हैं। रजोगुण तथा तमो गुण से विमुक्त होकर वे संसार रूपी सागर से पार हो जाते हैं।

जो लोग वाराणसी (काशी) के भक्त हैं वे निश्चित ही मेरे भक्त हैं। तथा ऐसे भक्त जीवन्मुक्त होते हैं। एवं शरीर त्यागोपरान्त उन्हें मोक्ष लक्ष्मी निश्चित ही वरण करती है।

मोक्षलक्ष्मीरियं काशी येभ्य: परिरोचते ।
स्वर्लक्ष्मीं काङ्क्षमाणेभ्य: पतितास्ते न संशय: ॥
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५०)

अर्थ – मोक्षलक्ष्मी यह काशी जिन्हें नहीं रूचती है। जिन्हें नहीं प्रिय लगती है। तथा जो केवल स्वर्ग लक्ष्मी को ही चाहते हैं। वे पतित ही होते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।



काशीं सङ्कुर्वमाणानां पुरुषार्थचतुष्टयम् ।
पुरः किङ्कर वत्तिष्ठेन्ममानुग्रहतो द्विजाः ॥
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५१)

अर्थ - विश्वनाथ जी अगस्ती जी से बोले - हे द्विज-गण ! जो भक्त काशी प्राप्ति की आकाङ्क्षा करते हैं। उन्हें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-चारों पुरुषार्थ (किङ्कर) सेवक की तरह उनके सामने खड़े रहते हैं। क्यों कि काशीवासी लोग मुझसे अनुगृहीत होते हैं।

आनन्दकानने ह्यत्रज्वलद्दावानलोऽस्म्यहम् ।
कर्मबीजानि जन्तूनां ज्वालयेन प्ररोहये ॥
वस्तव्यं सततं काश्यांयत्नतोऽहं प्रपन्नतः ।
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५२, ५३)

अर्थ - भगवान शिव कहते हैं कि इस आनन्द कानन में मैं धधकता हुआ दावानल (दावाग्नि) हूँ। अतः जीवों के कर्मबीज को भस्मसात् करता रहता हूँ। इन्हें उगने देता ही नहीं हूँ। अतः भक्तों को काशी में निरन्तर ही निवास करना चाहिए। तथा मेरी उपासना प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिए।

धन्यामद्भक्तिलक्ष्माणो ब्राह्मणाः काशिवासिनः ।
यूयं यच्चेतसो वृत्तेर्न दूरेऽहं न काशिका ॥
दातव्यो वो वरः कोऽत्र व्रियतां मे यथा रुचि ।
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५५, ५६)

अर्थ - काशीवासी मेरी भक्ति से (परिपूर्ण) संयुक्त ब्राह्मण धन्य हैं। आप जैसे भक्तों की चित्त वृत्ति से न मैं दूर हूँ न हीं काशी। अतः आप लोगों को वर देना चाहता हूँ। तो ले अपनी इच्छानुसार आप कौन सा वर चाहते हैं।

कलि: काल: कृतंकर्म त्रिकण्टकमितीरितम् ।
एतत्त्रयं न प्रभवेदानन्दवन वासिनाम् ॥
(काशी खण्ड)

अर्थ- कलि, काल और कृतकर्म इन तीनों का नाम त्रिकण्टक है काशी आनन्दवनवासियों के लिए ये तीनों आविर्भूत (प्रकट) नहीं होते हैं।

ततो नैव चरेत्पापं कायेन मनसा गिरा ।
एतद्रहस्यं वेदानां पुराणानां द्विजोत्तमा: ॥
मृतानां वै पुनर्जन्म न भूयो भवसागर: ।
(शिव पुराण)

काशीवासी को पाप नहीं करना चाहिए-चाहे वह देह से हो-चाहे मन से-चाहे वाणी से यही वेदों का पुराणों का रहस्य है यहाँ मरनेवालों का पुन: जन्म नहीं होता। और वे पुन: भवसागर में भी नहीं फसते।

गङ्गोत्तरवहा काश्यां लिङ्गं विश्वेश्वरं मम ।
उभे विमुक्तिदे पुंसां प्राप्येदानवलात्कलौ ॥

अर्थ-काशी में गङ्गा उत्तरवाहिनी हैं और मेरा विश्वेश्वर नाम का लिङ्ग है। कलियुग में दान देने से प्राप्त होने वाले ये दोनों स्थान स्वयं प्राप्त होजाते हैं।

जन्ममृत्युभयं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ।
नैः श्रेयसीं गतिं पुण्यां तथा योगगतिं व्रजेत् ॥
(मत्स्य पु० अ० १८२ श्लो० १३)

अर्थ - काशी में जन्म मृत्यु के भय को पार कर वह परमगति को प्राप्त करता है। नैःश्रेयस गति तथा पुण्य मय योग गति को पा लेता है।

न हि योगगतिर्दिव्या जन्मान्तरशतैरपि ।
प्राप्यते क्षेत्र माहात्म्यात् प्रभावाच्छंकरस्य तु ॥
(मत्स्य पु० अ० १८२ श्लो० १४

अर्थ - सैकड़ों जन्मों में भी दिव्य योगगति नहीं मिलती। किन्तु काशी इस क्षेत्र के प्रभाव तथा भगवान् विश्वनाथ जी की कृपा से वह मुक्ति को पा लेता है।

आदेहपतनाद् यावत् क्षेत्रं यो न विमुञ्चति ।
न केवलं ब्रह्महत्या प्राक्कृतं च निवर्तते ॥
(मत्स्य पु० अ० १८२ श्लो० १६)

अर्थ - काशी में शरीर त्याग पर्यन्त जो काशी क्षेत्र को नहीं त्यागते तो वह केवल ब्रह्महत्या मात्र नहीं, अपितु पूर्वकृत पापों से भी छुटकारा हो जाता है। अर्थात् सभी पापों से वह व्यक्ति मुक्त हो जाता है।